nwda.gov.in

सूखी नदी को संकल्प से मिला नवजीवन, बदला 50 हजार लोगों का जीवन

प्रयागराज की लपरी नदी सिल्ट भरने के कारण 20 वर्षों से थी सूखी, युवा सीडीओ और ग्रामीणों के संयुक्त प्रयास से मिली सफलता

जागरण विशेष

अमरीश मनीष शुक्ल ● जागरण

पुनर्जीवन के बाद प्रवाहमान लपरी नदी ● जागरण

प्रयागराज: दस ग्राम पंचायतों की जीवन रेखा, जिसकी कहानियां नई पीढ़ी ने अपने बुजुर्गों से सिर्फ सुनी थी। उस नदी को एक युवा अधिकारी के संकल्प और ग्रामीणों ने एक वर्ष की अथक मेहनत से पुनः जीवंत कर दिया है। अब यह 10 गांव के हजारों लोगों को 'प्राणवायु' दे रही हैं। इसी के चलते वर्षों बाद इस 'धान के कटोरे' में फिर से धान की खेती शुरू हुई है। प्रयागराज मुख्यालय से करीब 60 किमी दूर कोरांव की लपरी नदी ग्राम पंचायत रत्यौरा से घेघसाही तक लगभग 17.5 किमी में बहती है और टोंस नदी में मिल जाती है। नदी के दोनों किनारों को ग्रीन बेल्ट में बदला जा रहा है। फलदार और छायादार पौधे रोपे जा रहे हैं। वर्षा की एक-एक बूंद संचित करने के लिए अब हर वर्ष नदी की तलहटी की खोदाई होगी।

लपरी का क्षय वर्ष 2000 के आस-पास होना शुरू हुआ और 2010 तक लपरी नदी का मार्ग जीर्ण-शीर्ण हो गया। तलहटी में मिट्टी भरते-भरते वह किनारे पर मौजूद खेतों के समानांतर आ गई। झाड़ियां, पेड़ और मिट्टी के टीलों ने जगह-जगह नदी का अस्तित्व ही खत्म कर दिया।

मैकेनिकल इंजीनियर और 2018 बैच के यूपी कैडर के आइएएस अधिकारी गौरव कुमार के नवाचार से लपरी नदी ने पुनर्जीवन की जंग जीत ली है। नदी का पूरा मार्ग पानी से भर गया है। नदी के दोनों किनारों पर वर्षों बाद परंपरागत धान की खेती शुरू हो गई है।

पर्यावरण दिवस पर जीर्णोद्धार का संकल्प: पांच जून, 2023 को पर्यावरण दिवस पर आइएएस अफसर गौरव कुमार की अगुवाई में इस नदी के जीर्णोद्धार के लिए मनरेगा योजना के तहत अभियान शुरू हुआ। दस गांव में मनरेगा के तहत अलग-अलग कार्य योजना बनी। हर गांव में लोगों को खुदाई का काम मिला। नदी मार्ग को वापस गहरा किया गया। अब नदी अपने पूर्व आकार में आ गई है, पानी भर चुका है। वर्ष 2001 के बाद जन्में बच्चे तो नदी की कहानियां ही सुनते थे, लेकिन वह भी अब जीवंत लपरी का साक्षात्कार कर रहे हैं।

अतिरिक्त सामग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।

जमीन पर किया ईमानदार प्रयास तो मिले सुखद परिणाम

गौरव कुमार
सीडीओ प्रयागराज

पर्यावरण और जल संरक्षण के लिए जमीन पर प्रयास करने के लिए संकल्प की जरूरत तो होती है और इच्छाशक्ति हो तो कोई भी काम असंभव नहीं है। पुनर्जीवित लपरी नदी अब सुखद अनुभूति देती है। सूखी नदी की तस्वीरें अंतरमन को कचोटती थीं। इस इलाके में लोगों की बड़ी परेशानी पानी थी। मुझे जब इस नदी के बारे में पता चला तो भौगोलिक स्थिति को परखा गया, मनरेगा से पुनरुद्धार शुरू हुआ, अब सुखद परिणाम सामने हैं। पूरी टीम, ग्रामीण हर कोई बधाई का पात्र हैं। इससे स्थानीय लोगों को रोजगार मिला। अब यह नदी आर्थिक व सामाजिक लाभ के साथ पर्यावरणीय लाभ भी दे रही है। नदियों के किनारे विविध जलीय पारिस्थितिकी तंत्र का विकास होता है, जो पर्यावरण का संतुलन बनाता है। अब दोनों किनारों को ग्रीन बेल्ट में परिवर्तित करेंगे।